जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जिनको हम चाहते हैं, यदि वे भी हमें चाहें तो संसार भी सारभूत भासित होने लगता है।
- सूक्तिसंग्रह, पृष्ठ-32

वर्ष : 24 | मार्च (द्वितीय) 2002 | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अंक: 22 | सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

लगातार चार-चार पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

1. गजपंथा (नासिक-महा.) : 11 से 17 फरवरी 2002 तक आयोजित इस पंचकल्याणक के समाचार मार्च (प्रथम) अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं।

2. विदिशा (भद्दलपुर-उदयगिरि) : यहाँ पूज्य 108 श्री निर्वाणसागरजी महाराज के मंगल सान्निध्य में श्री 1008 नेमिनाथ दिग. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 11 से 17 फरवरी 2002 तक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर महाराजश्री के आध्यात्मिक प्रवचनों के साथ-साथ डॉ.हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पं. ज्ञानचन्दजी विदिशा, पं. रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पं. बजुभाई अजमेरा राजकोट, पं. रमेशचन्दजी बांझल इन्दौर, पं. प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पं. बाबूभाई मेहता फतेपुर आदि विद्वानों के भी प्रवचन हुये।

विधि-विधान के कार्य प्रतिष्ठाचार्य पं. संजयजी शास्त्री जेवर तथा सह-प्रतिष्ठाचार्य पं. लालजीरामजी विदिशा, पं. विरागजी शास्त्री व पं. सुधीरजी शास्त्री जबलपुर, पं. पूरनचन्दजी सोनागिर, पं. बाबूलालजी अशोकनगर ने सम्पन्न कराये।

सप्तदिवसीय मंगल महोत्सव में प्रतिदिन दैनिक कार्यक्रम पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के आध्यात्मिक टेप प्रवचन से प्रारंभ होते थे।

16 फरवरी को दीक्षाकल्याणक के अवसर पर डॉ. भारिल्ल के 12 भावनाओं पर हुये प्रवचन के बाद महाराजश्री का मांगलिक प्रवचन भी हुआ। इसी दिन श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर का शिलान्यास सोल्लास सम्पन्न हुआ।

सम्पूर्ण आयोजन पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा एवं पण्डित राकेशकुमारजी नागपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में श्री मलूकचन्दजी जैन खेरुआवाले, श्री ऋषभजी बड़कुल, सेठ दीपकजी जैन, श्री चक्रवर्ती जैन एडवोकेट, श्री रविप्रकाश पटेल, श्री संजय जैन करैयावाले, श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन मानपुर वाले, श्री अनिलकुमार सिरेहमलजी जैन, श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन पिपरइवाले, श्री प्रकाशचन्दजी जैन, श्री राजेशजी जैन, डॉ. मुकेश 'तन्मय' शास्त्री के साथ-साथ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन विदिशा एवं इंजीनियरिंग फोरम विदिशा के सदस्यों का सराहनीय भी सहयोग रहा। अन्त में डॉ. आर. के. जैन ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं सभी विद्वानों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर 52 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 4950 रुपये के कैसिट्स घर-घर पहुँचे।

3. खनियांधाना (शिवपुरी) : पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 113 वीं जन्मजयन्ती के उपलक्ष में 113 फीट उत्तुंग नवनिर्मित जिनमंदिर प्रांगण में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के निर्देशन में 19 से 25 फरवरी 2002 तक श्री 1008 नेमिनाथ दिग. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन होते थे। इसके साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पं. रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पं. विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पं. अभयकुमारजी छिन्दवाड़ा, ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल'ललितपुर, पं. हेमचन्दजी 'हेम' भोपाल एवं पं. राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के भी व्याख्यानों का लाभ मिला।

विधि-विधान के कार्य प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री एवं सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मधुकरजी जलगांव, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

22 फरवरी को जन्मकल्याणक का विशाल जुलूस प्रतिष्ठामण्डप से पाण्डुक-शिला पर पहुँचा, जहाँ बालतीर्थंकर का 1008 कलशों से जन्माभिषेक किया गया। 23 फरवरी को तपकल्याणक के प्रसंग पर दीक्षावन में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का संसार की असारता को दर्शानेवाला वैराग्यगर्भित प्रवचन हुआ।

इस प्रसंग पर डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई ने प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री को श्रीफल एवं 10 हजार रुपये से सम्मानित किया।

25 फरवरी को निर्वाणकल्याणक के दिन विशाल गजरथ समारोह में लाखों जैन-अजैन श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर 30 हजार रुपये का सत्साहित्य बिका तथा 11525 रुपये के प्रवचनों के कैसिट्स एवं सी.डी.घर-घर पहुँचे।

4. दिल्ली : भारत देश की राजधानी दिल्ली महानगर के दिलशाद गार्डन में श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 26 फरवरी से 3 मार्च 2002 तक पूज्य आचार्यश्री 108 धर्मभूषणजी महाराज एवं मुनिश्री 108 सम्यक्त्वभूषणजी महाराज के पावन सान्निध्य में सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के पंचकल्याणक की विषयवस्तु पर अत्यन्त सारगर्भित एवं तात्त्विक प्रवचन हुये।

विधि-विधान के कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद ने पं. शान्तिकुमारजी पाटील बेलगाव के सहयोग से सम्पन्न कराये। निर्देशन पं. अशोककुमारजी लुहाड़िया जयपुर एवं पं. राकेशजी शास्त्री लोनीवालों ने किया।

28 फरवरी को जन्मकल्याणक के दिन बाल तीर्थंकर का 1008 स्वर्ण-रजतमयी कलशों से जन्माभिषेक किया गया। रात्रि में इन्द्रसभा एवं राजसभा का आयोजन किया गया। मोक्षकल्याणक के दिन सम्मेद शिखर की रचना, जिनबिम्ब विराजमान आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

सम्पूर्ण आयोजन में श्री कुमकुमेन्द्र जैन, श्री जे. के. जैन, श्री रमेशचन्द जैन, श्री लक्ष्मणदास जैन, श्री चतरसैन जैन, श्रीमती सुधा जैन, श्री वीरेन्द्रकुमार जैन, श्री प्रकाशचन्द जैन, श्री राजेन्द्र जैन, पण्डित अशोक जैन शास्त्री, श्री नरेशचन्द जैन आदि अनेक महानुभावों का सराहनीय योगदान रहा। इस अवसर पर 40 हजार 445 रुपये का सत्साहित्य एवं 9879 रुपये के कैसिट्स घर-घर पहुँचे।

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन 2

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

हरिवंशपुराण का लोक वर्णन उल्लेखनीय है। वैसे अन्य कथाग्रन्थों में लोक आदि का वर्णन संक्षेप में ही हुआ है, पर इस ग्रन्थ की यह विशेषता है। धर्म और अध्यात्म के वर्णन में भगवान नेमीनाथ की दिव्यध्वनि को निमित्त बनाकर ग्रन्थकार ने सातत्तत्त्वों का निरूपण बहुत विस्तार से किया है, जिसका मूल आधार आचार्य उमास्वामी का तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) है और पूज्यपादस्वामी की सर्वार्थसिद्धि है।

पुराणों को हिन्दु एवं जैन परम्पराओं में अपने-अपने काल के विश्वकोष बनाने का प्रयत्न किया गया, उनमें न केवल कथानक हैं; किन्तु प्रसंग पाकर यथास्थान धर्म और नीति के अतिरिक्त नाना कलाओं तथा ज्ञान-विज्ञान का वर्णन भी संक्षेप में करा दिया गया है। प्रस्तुत हरिवंशपुराण में भी यह बात विशेषरूप से पायी जाती है। मात्र कथावस्तु का ज्ञान कराना ग्रन्थकार का उद्देश्य नहीं होता; कथानक के माध्यम से ग्रन्थकार पाठकों को सदाचार, नैतिकता के साथ मोक्षमार्ग का संदेश देना चाहते हैं।

यहाँ जो तीनलोक का स्वरूप, तीर्थंकर भगवान महावीरस्वामी का जीवन चरित्र, समवसरण एवं धर्मोपदेश तथा प्रासंगिक संगीतकला आदि का वर्णन किया है, वह उन-उन विषयों का परिपूर्ण प्रकरण है। ग्रन्थकर्ता के गुरु का नाम कीर्तिषेण था। ग्रन्थ रचना का समाप्तिकाल शक् संवत् 705 है। ग्रन्थकार ने अपने ग्रन्थ के समाप्तिकाल के साथ-साथ यह उल्लेख भी कर दिया है कि उन्होंने कहाँ, किन स्थानों पर बैठकर यह रचना की है। उनकी यह सूचना ग्रन्थ के उपान्त्य दो श्लोकों में सर्ग 66, श्लोक 52-53 में पायी जाती है। तदनुसार ग्रन्थ का बहुभाग पहले वर्धमानपुर के पार्श्वनाथ मंदिर में बैठकर रचा था और शेष भाग शान्तिनाथ के उस शान्तिपूर्ण मंदिर में जहाँ दोस्तटिका के लोगों ने वृहत्पूजा का आयोजन किया था।

ग्रन्थ के अन्तिम पद्य में इस पुराण को ऐसा श्री पर्वत कहा है, जिसका ग्रन्थकार ने बोधिलाभार्थ आश्रय लिया और यह आशा व्यक्त की कि यह श्री पर्वत रूप ग्रन्थ समस्त दिशाओं में व्याप्त होकर व स्थिर बनकर पृथ्वी पर प्रतिष्ठित रहे।

यह प्रस्तुत ग्रन्थ की सामान्य पृष्ठभूमि है, विशेष जानकारी के लिये सम्पूर्ण ग्रन्थ के अनुशीलन की महती आवश्यकता है। यह ग्रन्थराज बृहदाकार में 66 सर्गों में रचा गया है; आज के अर्थप्रधान युग के व्यस्ततम जीवन में अध्ययन की भावना होते हुए भी किसी को इतना समय नहीं मिल पाता कि वह इतने बड़े ग्रन्थ का लाभ ले सके। एतदर्थ बहुत समय से इसके संक्षिप्त संस्करण की भावना मन में संजोये था; परन्तु प्रत्येक कार्य का अपना स्वकाल होता है। जब उसकी पर्यायगत योग्यता होती है, तभी होता है। अन्य कारण तो निमित्तमात्र हैं, बस इसी विचार से अबतक समता रखे रहा। यदि यह काम निर्विघ्न समाप्त हो सका तो मुझे प्रसन्नता होगी।

इस हरिवंशपुराण में मात्र कौरव, पाण्डव एवं कृष्ण की ही कहानी नहीं है, ये तो 22 वें तीर्थंकर नेमीनाथ के युग में हुये पुराण पुरुष हैं; जबकि राजा हरि तो दसवें तीर्थंकर शीतलनाथ के युग में हुए थे, जिनके नाम पर इस पुराण की रचना हुई है।

भगवान शीतलनाथ के युग में सुमुख और वनमाला मुनिराज को भक्तिपूर्वक दिये आहारदान से प्राप्त पुण्य के फलस्वरूप महाराजा आर्य और महारानी मनोरमा नामक विद्याधर हुये। इन्हीं महाराजा आर्य और मनोरमा के 'हरि' नामक पुत्र हुआ। राजकुमार हरि ही इस हरिवंश की उत्पत्ति का कारण बना। यह हरि हरिवंश का प्रथम राजा था। हरिवंश के राजाओं की परंपरा में हरि के पुत्र हिमगिरि, हिमगिरि के पुत्र वसुगिरि और वसुगिरि के पुत्र गिरि हुये।

इसी हरिवंश में परम्परागत मगधदेश के स्वामी राजा सुमित्र हुये। उनकी पटरानी पद्मावती थीं, जो जिनभक्त थीं। सुमित्र की राजधानी कुशाग्रपुर थी। ये सुमित्र और पद्मावती ही 20वें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के माता-पिता थे। इसी हरिवंश के राजा सुव्रत ने आगे चलकर अपने पुत्र दक्ष को राज्य देकर तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ से दीक्षा ली थी। इसप्रकार हम देखते हैं कि यादव कुलोत्पन्न कौरव-पाण्डव, कृष्ण और तीर्थंकर नेमीनाथ भी इसी हरिवंश की परम्परा में हुये हैं।

हरिवंश पुराण का सारांश

यद्यपि ग्रन्थ के नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें मुख्यरूप से हरिवंश का ही कथानक होगा; परन्तु इसके अध्ययन से स्पष्ट है कि हरिवंश कथा के बहाने ग्रन्थ के कर्ता आचार्य जिनसेन ने जिनागम का सार ही भर दिया है। प्रारंभ के चौदह सर्गों तक तो हरिवंश की चर्चा भी नहीं आयी है।

प्रथम सर्ग – मंगलाचरण के अन्तर्गत अनादि-अनंत जिनशासन, तीर्थनायक भगवान महावीरस्वामी एवं ऋषभादि तेईस तीर्थंकर, अतीत-अनागत के चौबीस जिनेन्द्र और अरहंतादि पंचपरमेष्ठियों का स्तवन करके पूर्वाचार्यों का स्मरण किया गया है। तत्पश्चात् सज्जन प्रशंसा, दुर्जन निन्दा, ग्रन्थ करने की प्रतिज्ञा, स्वाध्याय की उपयोगिता आदि का वर्णन है।

मंगलाचरण के रूप में प्रारंभ के 49 श्लोकों में चौबीसों तीर्थंकर और उनके प्रमुख गणधरों को स्मरण करके भगवान महावीरस्वामी के बाद उनकी परम्परा में हुये श्रुतकेवली एवं अन्य ग्रन्थकर्त्ता आचार्यों को उनकी उत्कृष्ट कृतियों के साथ बहुत ही सम्मानपूर्वक स्मरण, नमन किया है। तत्पश्चात् 50 एवं 51 वें श्लोक में हरिवंशपुराण कहने की प्रतिज्ञा की है। हरिवंश की प्रशंसा करते हुए कहा है कि जो बद्धमूल है, प्रारंभिक इतिहास से सहित है, अत्यन्त प्रसिद्ध है, अनेक कथाओं-उपकथाओं से विभूषित है। पाठकों के लिए पुण्यफल प्रदान करनेवाला है, पवित्र है, कल्पवृक्ष के समान फलदायक है, उत्कृष्ट है, तीर्थंकर भगवान नेमिनाथस्वामी के चरित्र से उज्ज्वल है, मनोहारी है।

ग्रन्थकार ने पूर्वाचार्यों को सूर्य की उपमा देकर एवं स्वयं को जुगनू, दीपक कहकर अपनी लघुता प्रगट की है। ग्रन्थ की महिमा का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि जो भव्य जीव मन-वचन-काय की शुद्धिपूर्वक इसका सदा अभ्यास करेंगें, पढ़ेंगे, सुनेंगे; उनके लिए यह पुराण कल्याणकारी होगा। स्वाध्याय को अज्ञान का नाशक होने से परमतप कहा गया है।

इस पुराण के सर्व प्रथम सर्ग में सम्पूर्ण पुराण की विषयवस्तु का, पूरे ग्रन्थ में वर्णनीय विषय का सूचि के रूप में संक्षेप कथन कर दिया है, वर्तमान समय में प्रारंभ में ही ग्रन्थ में आये विषय की सम्पूर्ण सूचि देने की परम्परा है, पहले भी यही बात अन्यरूप में थी, जैसा कि प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रथम सर्ग से स्पष्ट है। पाठक प्रथम सर्ग पढ़कर ही सम्पूर्ण ग्रन्थ में कहाँ/क्या कथन आया है, यह जान सकते हैं और इससे आगे पढ़ने की जिज्ञासा जागृत हो सकती है।

एवं 71 वें श्लोक में विषय सूचि का उल्लेख करते हुए कहा है कि – इस पुराण में सर्वप्रथम लोक के आकार का वर्णन है, फिर राजवंशों की उत्पत्ति, तदनन्तर हरिवंश अवतार, फिर वसुदेव की चेष्टाओं का कथन, तदनन्तर नेमीनाथ का चरित्र, द्वारिका का निर्माण, युद्ध का वर्णन और निर्वाण – ये आठ शुभ अधिकार कहे गये हैं। ये सभी अधिकार अपने अवान्तर अधिकारों से अलंकृत हैं तथा पूर्वाचार्यों द्वारा निर्मित शास्त्रों का अनुकरण करनेवाले मुनियों के द्वारा लिखे गये हैं। **(क्रमशः)**

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(96 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

यहाँ व्याकरण इत्यादि जानने की महिमा नहीं है; परन्तु जो ज्ञान आत्मस्वभाव की ओर झुककर शुद्ध आत्मा का अनुभव करता है, उस ज्ञान की ही महिमा है; इसलिये आचार्यदेव कहते हैं कि हे जीव ! तू शुद्ध आत्मा के बराबर ही है। हमारी वाणी के कारण से नहीं; परन्तु अपने स्वानुभव से प्रमाण करना। वाणी के लक्ष से तो विकल्प होगा, उसकी मुख्यता नहीं करना, अन्य किसी ज्ञान की मुख्यता न करके शुद्धात्मा की मुख्यता करके उसका स्वानुभव करना।

यहाँ कोई कहता है कि यह समयसार सुनकर क्या करना ?

आचार्य कुन्दकुन्द प्रभु कहते हैं कि स्वानुभव से शुद्धात्मा को प्रमाण करना। वे कहते हैं कि मेरे आत्मा का जितना निज वैभव है, उस सबसे मैं इस एकत्व-विभक्त आत्मा को दर्शाऊँगा। मैं जिसप्रकार दर्शाऊँ उसीप्रकार सभी श्रोतागण स्वयमेव अपने अनुभवप्रत्यक्ष से परीक्षा करके प्रमाण करना। बाहर के जानपने अथवा बोल में कहीं चूक जाऊँ तो उसे पकड़ने में सावधान न होना। सावधानी तो शुद्धात्मा में ही रखना।

हे जीव ! यदि तू एकत्व-विभक्त आत्मा के अलावा मुझमें दूसरा लक्ष्य करके अटकेगा तो तुझमें ही दोष की उत्पत्ति होगी। परतरफ लक्ष करके अटकना ही दोष है; क्योंकि सर्वप्रथम तो अपने में दोष करके अटकेगा तो दूसरे के दोष की ओर तेरा लक्ष्य अवश्य जायेगा; परन्तु तू एकत्व-विभक्त शुद्धात्मा के अलावा दूसरे किसी पर लक्ष्य करके नहीं अटकेगा तो दूसरे में भी दोष देखने का विकल्प खड़ा नहीं होगा। मैं शुद्धात्मा कहता हूँ और तू उसकी हाँ ही पाड़ना और मैं जो बताना नहीं चाहता हूँ, उसके ऊपर तू ध्यान मत देना। मैं जिस एकत्व-विभक्त आत्मा को दर्शाना चाहता हूँ, उसे लक्ष में लेकर उसकी ही हाँ पाड़ना।

श्री आचार्यदेव निर्मानतापूर्वक कहते हैं कि मैं अभी छद्मस्थ हूँ। श्री तीर्थंकर भगवान की दिव्यध्वनि में अथवा गणधरदेव की रचना में तो किसी प्रकार की भूल नहीं होती है; परन्तु मेरी इतनी सामर्थ्य नहीं है; अत: कहीं व्याकरण इत्यादि में दोष आ जाना संभव है। स्वानुभव में तो मैं नि:शंक हूँ। अपने स्वानुभव से मैं शुद्धात्मा का जो कथन करूँगा उसमें तो कुछ चूक होगी ही नहीं । अहो ! आचार्यदेव की जितनी नि:शंकता है, उतनी ही निर्मानता है। अत: वे कहते हैं कि मैं सर्वज्ञ नहीं हूँ; परन्तु छद्मस्थ हूँ; फिर भी मुझे शुद्धात्मा का प्रचुर स्वसंवेदन वर्तता है अर्थात् मैं अपने स्वानुभव से शुद्धात्मा का जो वर्णन करूँगा उसमें तो कहीं दोष नहीं ही आयेगा; परन्तु व्याकरण सम्बन्धी विभक्ति इत्यादि में कदाचित् कोई दोष आ जाये तो तुम उसकी मुख्यता नहीं करना; परन्तु उसे गौण करके एकत्वस्वभाव को ही मुख्यरूप से देखना, उसी स्वभाव की ओर झुकना।

देखो ! आचार्य भगवन्त को शुद्धात्मा दर्शाने का विकल्प उठा है। और वे सामने बैठे शिष्य की भी अनुभव करने की पात्रता बताते हैं ह्न 'मैं दर्शाता हूँ और तुम उसे प्रमाण करना।' ऐसा आचार्यदेव ने कहा है तो सामने शुद्धात्मा को प्रमाण करनेवाला जीव न हो - ऐसा होता ही नहीं है। दर्शाऊँ तो करना प्रमाण - ऐसा कहने में आचार्यदेव को पता है कि शिष्य ने पूर्व में, अनंतकाल में जिसप्रकार से शुद्धात्मा का श्रवण नहीं किया है, उस भाव को टालकर अब दूसरे ही प्रकार से अपूर्वपने शुद्धात्मा का श्रवण करके उस शुद्धात्मा को समझ जायेगा। पूर्व में तूने जिसे कभी जाना नहीं है - ऐसा शुद्धात्मा मैं तुम्हें अब बताता हूँ; अत: तुम अपूर्वभाव से उसे प्रमाण करके स्वानुभव करना।

इसप्रकार इस समयसार को सुननेवाले और कहनेवाले दोनों को शुद्धात्मा की अपार उमंग है। मैं शुद्ध आत्मा बताता हूँ और तुम हाँ ही पाड़कर अपने स्वानुभव से प्रमाण करना - ऐसा कहने के बाद छठवीं गाथा में आचार्यदेव ने आत्मा का एकत्व-विभक्त ज्ञायकस्वभाव दर्शाया है।

अहो ! जो चैतन्यलक्षी जीवन है, वही प्रशंसनीय है। चैतन्यलक्ष के बिना जीवन तो मुर्दा समान है। चैतन्य का भान करके उसके अनुभव में जो ठहरे, उनकी धन्यता की तो बात की क्या ! परन्तु जगत के जंजाल की चिन्ता छोड़कर जिसे अन्तर में दिन-रात आत्मा के हित की चिन्ता जागी है। उनका जीवन भी प्रशंसनीय है।

जीव अनादि-काल से संसार में रखड़ता है। अनादि से संसार में रखड़ते हुये उसने आत्मा को भूलकर शरीरादि परद्रव्यों की ही चिन्ता की है; परन्तु आत्मा का स्वभाव क्या है और उसका संसार-परिभ्रमण कैसे टलेगा - इसकी चिन्ता कभी नहीं की। अत: यहाँ आचार्यदेव कहते हैं कि अहो ! चैतन्यस्वरूप में जो स्थित हुआ है उसकी तो क्या बात कहें; परन्तु जिसने आत्मा की चिन्तामात्र का परिग्रह किया है, उसका जीवन भी प्रशंसनीय है।

आस्तां तत्र स्थितो यस्तु चिंतामात्रपरिग्रहः ।
तस्यात्र जीवितं श्लाघ्यं, देवैरपि स पूज्यते ।।

जो पुरुष इस शुद्धात्मा को पहिचानकर उसके ध्यान में स्थिर रहता है, उसकी बात तो दूर रहो; परन्तु जो पुरुष शुद्धात्मा की चिन्ता का परिग्रह करनेवाला है, उसका भी जीवन इस संसार में प्रशंसनीय है तथा देवों द्वारा भी वह पूज्य है; अत: भव्य जीवों को सदा शुद्धात्मा का चिंतन करना चाहिये। **(क्रमश:)**

अवश्य ध्यान दें

अखिल भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी की आवश्यक बैठक 26 मार्च को आत्मसाधना केन्द्र, घेवरा मोड़, रोहतक रोड, दिल्ली में आयोजित है। **- अखिल बंसल**

अपूर्व अवसर ! आइये पधारिये !! 卐 श्री वीतरागाय नमः 卐 अपूर्व धर्मलाभ लीजिये !!!

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर मनाये जा रहे भगवान महावीरस्वामी के 2600 वें जन्मकल्याणक महोत्सव
के पावन प्रसंग पर देश की राजधानी दिल्ली महानगर में

श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में

'अध्यात्मतीर्थ' आत्मसाधना केन्द्र पर प्रथम बार फाल्गुन माह की अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(गुरुवार, 21 मार्च से गुरुवार, 28 मार्च 2002 तक)

कार्यक्रम स्थल : 'अध्यात्मतीर्थ' आत्मसाधना केन्द्र, घेवरा मोड़, रोहतक रोड, नई दिल्ली - 110041

पावन सान्निध्य

आचार्य श्री 108 धर्मभूषणजी महाराज

विद्वत् सान्निध्य	विधानाचार्य
डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर	पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा
पण्डित प्रकाशचन्दजी 'हितैषी' दिल्ली	पण्डित संजीवजी दिल्ली
पण्डित अभयकुमारजी छिन्दवाड़ा	पण्डित संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा
पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा	पण्डित सुधीरजी शास्त्री जबलपुर
पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर	पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा
पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री दिल्ली	पण्डित गौरवजी शास्त्री चन्देरी

निर्देशन

बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद

मांगलिक कार्यक्रम

प्रातः 6.00 बजे से पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन
6.30 बजे से जिनेन्द्र अभिषेक व पूजन
8.00 बजे से श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान
10.00 बजे से प्रवचन

दोपहर 2.15 बजे से कक्षायें
3.00 बजे से व्याख्यानमाला
3.45 बजे से प्रवचन

सायं 6.00 बजे से बालकक्षा
6.45 बजे से जिनेन्द्र भक्ति
7.15 बजे से प्रवचन
8.00 बजे से प्रवचन
8.45 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम

विशेष कार्यक्रम

गुरुवार, 21 मार्च 2002 (प्रातः)
✽ मंगल कलश शोभायात्रा ✽ झण्डारोहण
✽ सिद्धचक्र मण्डप उद्घाटन ✽ सिद्धचक्र महामण्डल उद्घाटन

शनिवार, 23 मार्च 2002 (रात्रि)
✽ कुन्दकुन्द का वैराग्य (नाटक) ✽ कवि सम्मेलन

रविवार, 24 मार्च 2002
प्रातः - वेदी शुद्धि समारोह, स्तम्भ शिलान्यास
दोपहर - अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन दिल्ली एवं उत्तरप्रदेश का संयुक्त प्रान्तीय अधिवेशन

गुरुवार, 28 मार्च 2002
✽ शान्तियज्ञ ✽ जिनेन्द्र शोभायात्रा ✽ जिनप्रतिमा स्थापन

सम्पर्क-सूत्र

श्री पृथ्वीचन्द जैन - 5968189
श्री आदीश जैन - 5284428, 5286428

आमंत्रणकर्त्ता

श्री विमलकुमार जैन परिवार
डी-9, विवेक विहार, दिल्ली

आयोजक

आत्मार्थी ट्रस्ट (रजि.),
फोन - 5968189, फैक्स - 5286428

डॉ. भारिल्ल के जन्मस्थान बरौदास्वामी में -

स्वाध्याय भवन का उद्घाटन

सोमवार, दिनांक 18 फरवरी 2002 को डॉ. हुकमचन्दजी एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की जन्मस्थली बरौदास्वामी (ललितपुर) ग्राम में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा निर्मित **श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय भवन** का उद्घाटन भारिल्ल परिवार द्वारा सम्पन्न किया गया।

समारोह की अध्यक्षता यहीं के भूतपूर्व जागीरदार कुंवर महेन्द्रसिंहजी बुन्देला ने की। स्थानीय समाज के अतिरिक्त ललितपुर के सर्व श्री हीरालालजी खजुरिया, अभयकुमारजी टडैया, सुरेशचन्दजी वकील, हुकमचन्दजी कौशल, ज्ञानचन्दजी अलया आदि अनेक गणमान्य तथा आसपास के नगरों के भी विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे।

सम्पूर्ण निर्माणकार्य श्री हीरालालजी खजुरिया एवं श्री गुलाबचन्दजी लागौन वालों के निर्देशन में सम्पन्न हुआ है; अत: उन्हें सम्मानित किया गया। अन्त में प्रीतिभोज का भी आयोजन हुआ।

आचार्य कुन्दकुन्द ज्ञान पहेली नं. 4 का परिणाम

फरवरी (प्रथम) 2002 में प्रकाशित ज्ञान पहेली के कुल 66 लोगों के उत्तर प्राप्त हुये हैं, जिनमें से 27 लोगों के सही उत्तर हैं। सही उत्तरदाताओं में से लकी ड्रॉ पद्धति द्वारा प्रथम पुरस्कार श्री चेतन जयकुमार जैन बारां ने, द्वितीय पुरस्कार श्रीमती सूर्याबेन हर्षवदन वी. शाह अहमदाबाद ने और तृतीय पुरस्कार श्री बाहुबली भोसगे हुबली ने प्राप्त किया है। सान्त्वना पुरस्कार श्रीमती ममता जैन सोनगीर, श्री महेन्द्र सुभाष महाजन रिसोड एवं श्री विपुल प्रमोदकुमार जैन सहारनपुर ने प्राप्त किये हैं। विजेताओं को पुरस्काराशि M.O. से भेजी जायेगी।

अन्य सभी सही उत्तर दाताओं के नाम इसप्रकार हैं - श्रीमती आरती जैन खण्डवा, श्री अशोक जैन धामनोद, श्री आशुतोष मोदी आगर, श्रीमती हीरादेवी लालावत कुण, श्री गुणपाल जैन कांधला, कु. रुचिका जैन जयपुर, कु. रितु जैन जयपुर, अनिता जैन रुड़की, श्रीमती रयणमंजूषा मथुरालालजी जैन इन्दौर, वंदना जैन शाहपुर, श्रीमती इन्द्रा जैन सिंगोडी, अभिलाष जैन सिंगोडी, रौनिक सुनील पटवा पंढरपुर, श्रीमती शक्ति जैन सागर, श्री नवीन जैन रुड़की, श्री जवाहरलाल नितेशकुमार जैन छिन्दवाड़ा, डॉ. सनत जैन कटंगी, श्रीमती राजकुमारी जैन रुड़की, महेन्द्रकुमार पाण्ड्या सिवनी, सौ. कंचन गिडीया खैरागढ़, एक जवाब पर नाम नहीं है।

ज्ञान पहेली नं. 4 के सही उत्तर

बांये से दायें - (1) संयम (2) छहढाला (7) रत्नत्रय (10) रति (11) समय (13) आठ (14) ममत्व (16) नाक (18) कर्ण (20) अधर्म (23) अशरण (24) मान (26) सात (29) दर्शन (30) ऊँ (31) दीप।

ऊपर से नीचे - (1) संवर (2) छ: (3) हस्त (4) लाल (5) कुमति (6) नियम (8) त्रस (9) मिथ्यात्व (10) रसना (12) यम (15) मद्य (17) करण (18) कर्म (19) अशन (21) धर्म (22) दान (24) माया (25) वेद (27) तप (28) धूप (30) ऊँ ।

हार्दिक बधाई !

जयपुर : राजस्थान जैनसभा के तत्त्वावधान में आयोजित **जैनधर्म और आतंकवाद** विषयक अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता में श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्र जितेन्द्रसिंह ने द्वितीयस्थान प्राप्त किया; एतदर्थ उन्हें हार्दिक बधाई!

पर्यटन (तीर्थदर्शन)

उत्तरप्रदेश

अयोध्या (कल्याणक क्षेत्र)

मार्ग-स्थिति : दिल्ली-बनारस-हावड़ा रेल मार्ग का प्रमुख स्टेशन अयोध्या लखनऊ से 139 कि.मी. इलाहाबाद से 160 व फैजाबाद से 5 कि.मी. सड़क मार्ग पर है।

विश्वप्रसिद्ध अयोध्या जैनधर्म के अनुसार स्वास्तिक चिन्ह पर अवस्थित अनन्तानन्त चौबीस तीर्थंकरों की जन्मभूमि होने से शाश्वत तीर्थ है। वर्तमान हुंडावसर्पणी काल में भी भगवान ऋषभदेव, अजितनाथ, सुमतिनाथ एवं अनन्तनाथ तीर्थंकरों में से ऋषभदेव के गर्भ एवं जन्म कल्याणकों तथा अन्य चार तीर्थंकरों के गर्भ, जन्म, दीक्षा एवं ज्ञान कल्याणकों की भूमि होने से यहाँ 18 कल्याणक सम्पन्न हुए हैं। अतीत में अयोध्या नगरी साकेत कौशल, अपराजिता, अवधपुरी आदि नामों से प्रसिद्ध रहा है। यह इक्ष्वाकु वंश के ऋषभदेव, भरत, सगर, हरिश्चंद्र, दशरथ, राम आदि राजाओं की कर्मभूमि भी रही है। यहाँ भगवान ऋषभदेव ने अपनी पुत्रियों ब्राह्मी व सुंदरी को ज्ञान-विज्ञान एवं जनता को असि, मसि, वाणिज्य एवं शिल्प का ज्ञान कराया। भरत-बाहुबली युद्ध, भरत का चक्रवर्ती पद, उनकी दीक्षा, राम का जन्म, वनवास एवं सीता का अग्नि प्रवेश आदि घटनायें इसी अयोध्या में घटित हुई हैं।

यहाँ के भगवान आदिनाथ के प्राचीन मंदिर पर मुसलमानों ने मस्जिद बना दी थी, तब दिल्ली के जैन श्री केशरीसिंह ने तत्कालीन बादशाह फैजुद्दीन को निवेदन किया कि इस स्थान पर भगवान आदिनाथ का जन्म-स्थान होना चाहिये। प्रमाणस्वरूप उसके खुदाई करने का अनुरोध करने पर नवाब के द्वारा खुदाई कराई गई तो उसके नीचे चौमुखा दीपक, एक साथिया एवं एक नारियल मिला। तब नवाब के आदेशानुसार मस्जिद के स्थान पर आदिनाथ का मंदिर बनवा कर अन्य मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया गया।

वर्तमान में कटरा में प्राचीन एवं रायगंज में नवनिर्मित विशाल मंदिर हैं। कटरा के प्राचीन मंदिर की मुख्य वेदी में भगवान आदिनाथ की 3 फीट ऊँची श्वेत पाषाण की प्रतिमा है। इसी वेदी में अजितनाथ भगवान की 1509 संवत् की प्रतिष्ठित प्रतिमा भी है। यहाँ तीसरी वेदी में भगवान आदिनाथ की 9 फीट ऊँची खड्गासन प्रतिमा के दोनों ओर भरत और बाहुबली की प्रतिमायें हैं।

एक विशाल परकोटे में नवनिर्मित रायगंज के मंदिर में भगवान आदिनाथ की 37 फीट ऊँची खड्गासन प्रतिमा अत्यन्त मनोज्ञ व दर्शनीय है। यहाँ कमल पुष्प की पंखुड़ियों पर 24 भगवान की मूर्तियाँ एवं समवशरण की कलापूर्ण रचना आदि भी दर्शनीय हैं।

इनके अलावा सरयूतट, कटरा स्कूल, बेगमपुरी एवं बम्सरिया में पाँचों तीर्थंकरों की 5 टोंकें भी पूजनीय व दर्शनीय हैं। ऋषभदेव की टोंक के समीप बिखरे खंडहरों से पुष्ट होता है कि यहाँ ऋषभदेव का जन्मस्थान व प्राचीन मंदिर था।

राम जन्मभूमि होने के कारण भारत के समस्त हिन्दुओं का आस्थास्थल होने के अलावा, सिक्खों के गुरु गोविन्दसिंह की वासस्थली होने से उनका गुरुद्वारा, बौद्धों के प्राचीन खंडहर मठ, मुसलमानों के द्वारा मान्य मक्का खुर्द, तुलसी मानस मंदिर, हनुमानगढ़ी, कनक भवन, सीता रसोई आदि अनेक दर्शनीय स्थल हैं। भारत के सभी धर्मावलम्बी इसे पावन तीर्थ मानते हैं।

आवास : यहाँ कटरा व रायगंज की जैन धर्मशालाओं के अलावा अनेक धर्मशालायें हैं।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

रत्नत्रय मण्डल विधान सानन्द सम्पन्न

जबलपुर : यहाँ पंचकल्याणक की द्वितीय वर्षगाँठ के पावन अवसर पर श्री रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित अनिल कुमारजी शास्त्री भिण्ड के प्रात: समयसार पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के भी प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल द्वारा सम्पन्न कराये गये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये। इस आयोजन से पूर्व छिन्दवाड़ा से पधारे पण्डित केसरीचन्दजी 'धवल' के आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। **- सपना जैन**

वैराग्य समाचार

1. श्री छोटेलालजी पाण्डे (देवरीकलां, सागर निवासी) मुम्बई प्रवासी का दिनांक 31 जनवरी 2002 को स्वर्गवास हो गया है। आप अच्छे समाजसेवी थे। म.प्र. के अनेकों तीर्थस्थानों पर आपका अमूल्य सहयोग रहा है। आपकी स्मृति में आपके परिवार की ओर से जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 750-750 रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

2. श्री विष्णुकुमार गोविंदसा डोणगांवकर का दिनांक 25 जनवरी 2002 को णमोकारमंत्र के स्मरणपूर्वक देहावसान हो गया है। आप स्वयं अच्छे विद्वान होने के साथ-साथ ब्र. आश्रम कारंजा, कंकुबाई श्राविकाश्रम आदि अनेक संस्थाओं के ट्रस्टी भी रहे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति को 250/- रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

3. श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्र श्री प्रमोदकुमारजी शास्त्री की मातुश्री रामकुंवर ध.प. ताराचन्दजी चौधरी पिपरा का दिनांक 11 फरवरी 2002 को धर्माराधनापूर्वक निधन हो गया है। आप जीवनभर धर्मसाधना करती रहीं। आपके परिवार की ओर से जैनपथप्रदर्शक समिति को 101/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

4. जयपुर निवासी श्री प्रेमचन्दजी गंगवाल का दिनांक 18 फरवरी 2002 को शान्त परिणामों पूर्वक देहावसान हो गया है। आपका पूरा परिवार धार्मिक संस्कारों से युक्त है। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति को 201/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

5. श्री बालचन्दजी मोदी बीनावालों का 14 फरवरी को देहावसान हो गया। आप सरल हृदय एवं धर्म के प्रति समर्पित व्यक्तित्व के धनी थे। आपकी स्मृति में डॉ. अमृतलालजी मोदी बीना द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति को 101 रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल कामना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

जयपुर	- 23 मार्च 2002	सेमिनार (विश्वविद्यालय)
दिल्ली	- 24 मार्च से 28 मार्च 2002	विधान - आत्मार्थी ट्रस्ट
कलकत्ता	- 30 मार्च से 6 अप्रैल 2002	सिद्धचक्र विधान
खतौली	- 19 से 22 अप्रैल 2002	महावीरजयन्ती
दिल्ली	- 23 से 25 अप्रैल 2002	पंचकल्याणक (सरोजनीनगर) महावीरजयन्ती

अमेरिका में द्वितीय वार्षिक शिविर का आयोजन

सभी साधर्मी बन्धुओं को सूचित किया जा रहा है कि अमेरिका के न्यूजर्सी शहर में जैन अध्यात्म एकेडमी ऑफ नार्थ अमेरिका **(JAANA)** द्वारा 4 से 7 जुलाई 2002 तक द्वितीय वार्षिक शिविर का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ.हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं पण्डित धीरजभाई मेहता मेहसाणा के साथ-साथ प्रोफेसर पारसमलजी अग्रवाल व अध्येता श्री प्रकाशजी जैन के व्याख्यानों, तत्त्वचर्चा एवं जिनभक्ति का लाभ प्राप्त होगा।

जो महानुभाव इस शिविर में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम, पता, सिटी, राज्य, जिप कोड के साथ-साथ फोन नं., ई-मेल नं. आदि की जानकारी अवश्य भेजें। जिनके परिजन वहाँ रहते हों, उन्हें अवश्य सूचित कर देवें।

नोट - डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के अमेरिका प्रवास का विस्तृत कार्यक्रम अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

कार्यक्रम स्थल -
Ramada Plaza Hotel & Conference Center 3050 Woodbrige Ave.Edison, New Jersey 08837

- पत्रव्यवहार का पता
जैन अध्यात्म एकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका, 601 वेस्ट पार्कर रोड, सूट 106 प्लानो TX 75023
Fax- 972-424-0680
email:info@jainadhyatma.org

पुस्तक समीक्षा

1. सूक्तिसंग्रह : आचार्य वादीभसिंह कृत क्षत्रचूड़ामणि ग्रन्थ से संकलित यह संग्रह अत्यन्त प्रभावोत्पादक बन गया है। सूक्तियों को कंठस्थ करने में कठिनाई नहीं होती है तथा दैनिक जीवन में भी इनका प्रयोग देखा जाता है। भारतीय वाङ्मय में सूक्तियों का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता रहा है। इस दृष्टि से संस्कृत जैनसाहित्य में क्षत्रचूड़ामणि एक अनुपम रचना है। सूक्तियों का हिन्दी अनुवाद देकर ब्र.यशपालजी जैन ने एक बड़े अभाव की पूर्ति कर दी है।

2. पंचपरमेष्ठी : साधर्मीभाई ब्र.रायमल्लजी कृत ज्ञानानन्द श्रावकाचार से संकलित पंचपरमेष्ठी के स्वरूप को प्रकट करनेवाली यह कृति अत्यंत हृदयग्राही एवं मर्मस्पर्शी है। इसे ब्र. यशपालजी ने संकलित एवं अनुवादित करके लघु पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत किया है।

आशा है इन दोनों पुस्तकों को पढ़कर सहृदय पाठक अवश्य लाभान्वित होंगे। इन दोनों की कीमत 4-4 रुपया है। **- प्रबन्ध सम्पादक**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) मार्च (द्वितीय) 2002
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित अनुभवप्रकाश** जैनदर्शनाचार्य, एम.ए., बी.एड. एवं **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 515581, 515458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर